इस तरह सरकार पर या निधि पर अवलंबन मैं पसंद नहीं करता हूँ। इस युग में निधि पर अवलंबित रहने से काम नहीं चलेगा। इन दोनों से स्वावलंबन का स्थान ऊँचा है, परन्तु वह भी संकुचित विचार है। गीता कहती है कि जो अपने खुद के लिए रसोई बनाकर खाता है, वह पाप खाता है। इसका अर्थ मैं यह समझा हूँ कि सेवक अपना सब कुछ समाज को समर्पण करे और समाज की तरफ से जो मिले, उसे प्रसाद समझकर ग्रहण करे। इस वृत्ति से कार्यकर्ता और संस्थाएँ अपना काम चलायेंगी तो उस कार्य में जान आयेगी।

यह ध्यान का समय है, इसलिए मैंने प्रकट चिन्तन, प्रकट ध्यान किया है।

पड़ाव पर पहुँचने पर

खाँडवारा १६-९-'५८

एक ओर सरकार, दूसरी ओर जनशक्ति

स्वराज्य से पूर्व हम लोग जो कुछ काम करते थे, वे सभी जनशक्ति से चलते थे। बिहार में भूकम्प हुआ तो हममें से कितने ही लोग वहाँ दौड़कर गये। वहाँ जनशक्ति से ही काम हुआ। गुजरात में भीषण बाढ़ आयी तो वहाँ भी कई नेता दौड़कर गये, इसके सिवा स्थान-स्थान पर खादी-केन्द्र, आदिवासी-केन्द्र, हरिजन-सेवा आदि सभी काम जनशक्ति से चलते रहे। उस समय सरकार का इन सबसे विरोध था। ये काम करते हुए हम लोग भी फूल जाते थे। कार्यकर्ताओं में आत्मविश्वास निर्माण हो गया था। आगे चलकर स्वराज्य प्राप्त हुआ। हमारी सरकार के हाथ में ये सारे काम आ गये। बहुत से काम स्वयं सरकार करने लगी। कृषि-सुधार, सड़क-निर्माण, नवीन-उद्योग-संचालन, स्कूल और पुलों का निर्माण जैसे काम, जिन्हें लोक-सेवा के काम कहा जाता है, सरकार द्वारा होने लगे।

सब कुछ सरकार करे तो जनशक्ति कैसे बढ़ेगी ?

किन्तु अगर सभी काम सरकार ही करने लगे तो लोग कभी खड़े नहीं हो सकते। सरकार के काम करने से लोगों को सुख अवश्य मिलेगा, फिर भी उन्हें स्वराज्य का अनुभव, आत्मशक्ति का अनुभव कभी न होगा। माँ यदि बच्चे को दूध पिलाती है तो बच्चा सुखी अवश्य होगा, पर स्वावलंबी नहीं। वह स्वावलंबी तभी होगा, जब अपने पैरों खड़े होकर मेहनत से अपना जीवन चलाये, ऐसा उद्योग उसके माता-पिता करें। इसी तरह सरकार के काम करने पर लोगों को सुख मिलने के बावजूद उनमें आत्मनिष्ठा न रह पायेगी, जनशक्ति न बढ़ेगी।

लोग स्वतंत्र रूप से अपने काम करें

इसलिए अब आवश्यकता इस बात की है कि लोग स्वतंत्र रूप से अपने काम करें। उसीसे लोकशक्ति निर्माण होगी। जिस तरह ७-७॥ वर्षों से भूदान का काम चल रहा है, उससे आज तक ४० लाख से ऊपर जमीन प्राप्त हुई है। उसमें ८-१० लाख एकड़ जमीन वितरित भी हो चुकी है। हजारों रुपयों का सम्पत्तिदान मिला है। चार हजार ग्रामदान भी मिले हैं। अब उस जमीन में कुएँ बना देना, सड़क बना देना, यह सारी ऊपरी मदद सरकार की हुआ करती है। लेकिन सारे काम इसमें लोगों ने ही किये हैं। यह सारा दान कानून से नहीं मिला है। अभी-अभी अक्राणी-महाल में जो ग्रामदान मिले हैं, वे सभी जनशक्ति से ही मिले हैं।

दोनों शक्तियों का संगम अपेक्षित

एक ओर से सरकार काम करे और दूसरी ओर से जनशक्ति बढ़ती रहे। यहाँ ऐसा ही काम होना चाहिए। संतोष की बात है कि यहाँ ऐसा ही काम चल रहा है। यहाँ दोनों शक्तियों का संगम हो गया है। लोगों का उत्थान भी होना ही चाहिए। सरकार की मदद का अर्थ यह कि लोगों को सरकार ही नियुक्त करती है और उनका वेतन आदि भी वही तय कर देती है। इससे लोगों के हाथ में कुछ भी नहीं रह पाता। इसलिए दोनों हाथों ताली बजनी चाहिए। बम्बई सरकार ने ऐसा ही कुछ प्रयोग करने का तय कर इस तरह के केन्द्र चलाये है। खाँडवारा का यह केन्द्र भी इन्हींमें से एक है। इसे मैं जानता हूँ। इसी तरह रत्नागिरि जिले में कणकवली के केन्द्र और गुजरात के केन्द्र को मैं जानता हूँ। यहाँ बालूभाई काम करते थे। कणकवली में अप्पासाहब पटवर्धन हैं और गुजरात में जुगतराम भाई हैं। सभी हमारे ४०-४० साल के मित्र हैं। इन्होंने ये काम सँभाले हैं। इस तरह की सरकार और जनता दोनों के संगम से ये तीन केन्द्र बड़ी अच्छी तरह चल रहे हैं। इन दोनों के सहयोग के ये स्वतंत्र प्रयोग हैं। सरकार काम करती है, यह इसका एक गुण है। जन-शक्ति से काम होता है, यह दूसरा गुण है। और दोनों की शक्ति मिलकर जो काम होता है, वह इसका तीसरा गुण है। इस तरह तिहरा काम हमारे देश में हो रहा है।

घर-घर सर्वोदय-विचार पहुँचायें

आज यहाँ भूदान के सिलसिले में मैं आया। अब महाराष्ट्र के अन्तिम छोर पर आ गया हूँ। इस पश्चिम खानदेश में महाराष्ट्र की शक्ति लगा देनी है। यहाँ कुछ ग्रामदान हुए हैं। यहाँ सेवा-केन्द्र और शान्तिसेना का भी बड़ा केन्द्र बन सकता है। प्रत्येक घर में सर्वोदय-पात्र होना चाहिए। सारे पश्चिम खानदेश में लोकसम्मति प्राप्त कर लोकशक्ति जगायी जाय, ऐसा प्रयत्न चल रहा है। सरकारी शक्ति के पूरक रूप में जनशक्ति निर्माण करने की योजना भी चल रही है। सरकार और हम दोनों भाई-भाई हैं। हम लोगों का योग इस केन्द्र में होगा, इसलिए इसके आस-पास के गाँवों में और केन्द्र में भी सर्वोदय-विचार का साहित्य प्रचारित किया जाय। घर-घर सर्वोदय-विचार पहुँचाया जाय। गीता-प्रवचन का प्रचार किया जाय। ये सब प्राथमिक कार्य और सर्वोदय-पात्र का भी कोई कार्य हो। इससे कार्यकर्ताओं की भी व्यवस्था हो जायगी।

ये केन्द्र उभयान्वयी और पुल का काम करनेवाले हैं। इन्हें ये काम करने चाहिए। मुझे आशा है कि यह केन्द्र उत्तरोत्तर बढ़ता जायगा और यहाँ के आसपास के गाँवों में ग्रामस्वराज्य का दृश्य देखने को मिलेगा।

अनुक्रम

१. मेरा काम है यह समझना ··· वसंतपुर २३ मई '५९ पृष्ठ ८११
२. ग्रामदान में भय की ··· बारडोली ७ सितंबर '५८ „ ८१२
३. निधि का आश्रय छोड़ने से ··· कठौर ३० सितंबर '५८ „ ८१५
४. एक ओर सरकार ··· खाँडवारा १६ सितंबर '५८ „ ८१६

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता : गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा', वाराणसी।
www.vinoba.in